"इकाई – 2"
"a"

वाणिज्य की पाठ्यचर्या का अवधारणा →

वाणिज्य की पाठ्यचर्या की अवधारणा निम्न है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, लाखा, बलिया

पाठ्यचर्या का अर्थ →

'करीकुलम' (Curriculum) शब्द की उत्पत्ती लैटिन भाषा के शब्द 'क्यूररे' (Currere) से हुई है, जिसका अर्थ है 'Race course' है (दौड़ का मैदान)। इस प्रकार पाठ्यचर्या में स्पर्धा एवं लक्ष्य-सिद्धि के भाव निहित हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या वह दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम आगे कुछ परिभाषा दे रहे हैं —

① कनिंघम के अनुसार, "पाठ्यचर्या कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक यन्त्र है जिससे वह अपनी सामग्री (शिष्य) को अपने आदर्श (लक्ष्य) के अनुसार अपने कलाग्रह (विद्यालय) में मोड़ता है।"

② क्रो व क्रो के शब्दों में, "पाठ्यचर्या में सीखने वाले या बालक के वे सभी अनुभव निहित हैं जिन्हे वह विद्यालय या उसके बाहर प्राप्त करता है। ये समस्त अनुभव एक कार्यक्रम में निहित किये जाते हैं जो उसके मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से विकसित होने

मे सहायता देता हैं।"

मीरा मेमोरियल म...
शिक्षण एव प्रशिक्षण
पाण्डेयपुर, ताखा

③ वाल्टर के मतानुसार, "पाठ्यचर्या मे वे समस्त अनुभव सम्मिलित हैं जिनको बालक विद्यालय के निर्देशन मे प्राप्त करते हैं, इसके अन्तर्गत कक्षा-कक्ष की क्रियाएं तथा उसके बाहर के समस्त कार्य एवं खेल सम्मिलित हैं।"

④ शिक्षा आयोग के अनुसार "विद्यालय के पर्यवेक्षण मे उसके अन्दर तथा बाहर अनेक प्रकार के कार्यकलापों से छात्रों को विभिन्न अध्ययन - अनुभव प्राप्त होते हैं, हम विद्यालय पाठ्यचर्या को इन अध्ययन - अनुभवो की समष्टि समझते हैं।"

पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त →

पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त निम्नवत हैं

① जीवन से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त → पाठ्यचर्या मे जिन विषयों को स्थान दिया जाए, उनका वास्तविक जीवन से सम्बन्ध होना चाहिए। ऐसे विषयों का अध्ययन करके ही बालक जीवन मे प्रवेश करने के बाद सफलता प्राप्त कर सकेगें। पुराने ढंग की पाठशालाओं और मकतबों का इसलिए लोप हो गया क्योंकि उनमें जो विषय पढ़ाये जाते थे उनका जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं

② उपयोगिता का सिद्धान्त → पाठ्यचर्या निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि इसमें जिन विषयो को स्थान दिया जाए वे बालक के भावी जीवन के

लिए उपयोगी होनी चाहिए। इस सम्बन्ध मे नन (Nunn) ने लिखा है, " साधारण मनुष्य सामान्यतः यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ व्यर्थ की बातें सीखें, परन्तु सूक्ष्म रूप मे वह यह चाहता है कि उनको वे बातें ही सिखाई जाएँ, जो भावी जीवन मे उनके लिए उपयोगी हों।

③ विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धान्त → किसी भी पाठ्यचर्या को सदैव के लिए निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसमें समय के साथ परिवर्तन किये जाने आवश्यक हैं। क्रो व क्रो (Crow & Crow) का कथन हैं, " वैज्ञानिक प्रगति, नवीन व्यावसायिक अवसर राष्ट्रों के अधिक विस्तृत अन्तर्सम्बन्ध, प्रगतिशील आदर्श और आकांक्षाएँ यह माँग प्रस्तुत करती हैं कि शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार का ज्ञान, कुशलता और दृष्टिकोण पर दिये जाने वाले विभिन्न प्रकार के बलों के अनुकूल बनाया जाए।"

④ अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त → शिक्षा की आधुनिक विचारधारा के अनुसार पाठ्यचर्या का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है, जिन्हें परम्परागत ढंग ढंग से पढ़ाया जाता है। पाठ्यचर्या में उन सब अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है जिनको बालक विभिन्न क्रियाओं द्वारा प्राप्त करता है। क्रियाएँ - विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशॉप खेल के मैदान तथा शिक्षकों और छात्रों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्कों मे चालू रहती हैं। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्यचर्या है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

"इकाई – 2"
"b"

वाणिज्य का सह सम्बन्ध →

वाणिज्य का सह सम्बन्ध निम्नवत

श्री... महाविद्यालय ... शिक्षा एवं ... संस्थान ... पुर, ... बलिया

शिक्षा के सह-सम्बन्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभू...

शिक्षा मे समन्वय प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीन काल मे शिक्षा जीवन केन्द्रित थी, परन्तु सह-सम्बन्ध का आधु... रूप 150 वर्ष पूर्व यूरोप मे विकसित हुआ। यह रूप प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हरबर्ट के के... दार्शनिक सिद्धान्तों से प्रारम्भ हुआ। हरबर्ट ... अनुसार शिक्षा का मुख्य ध्येय चरित्र निम... करना है। उसने कहा है कि यह उद्देश्... निर्देशनात्मक शिक्षण के माध्यम से प्राप्त कि... जा सकता है। निर्देश द्वारा विचार-चक्र निर्मित किया जाएगा और शिक्षा चरित्र का निर्माण करेगी। वह शिक्षा द्वारा रुचियों की वृद्धि, विकास तथा प्रयोग पर बल देता है। रुचियों का विकास ज्ञान द्वारा किया जा स... है। इसलिए उसने ज्ञान की प्राप्ति पर अधिक बल दिया। इसके लिए उसने विभि... विषयों का ज्ञान देने के लिए कहा, जिसमे छात्रों के विचारों मे वृद्धि हो। जैसे ह... विचार होते है, वैसे ही हमारे कार्य होते... इस प्रकार उसका विचार-चक्र पूर्ण होता ... जो कि चरित्र निर्माण करने में सहायक ... हरबर्ट ने सर्वप्रथम स्कूल के पाठ्य-विष... मे सह-सम्बन्ध स्थापित करने के लिए ... उसका कथन है कि पाठ्यक्रम में विषयों को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए जिससे...

कि एक विषय के शिक्षण मे दूसरे विषयों का ज्ञान सहायक हो सके। इसको उसने 'सह - सम्बन्ध के सिद्धान्त' (Principle of correlation) के नाम से पुकारा। उनका कथन है कि पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों को इस प्रकार सम्बन्धित करके पढ़ाया जाए जिससे बालकों के मस्तिष्क पर उनका समवेत प्रभाव पड़े।

वाणिज्य के सह-सम्बन्ध के उद्देश्य →

वाणिज्यशास्त्र की शिक्षा में सह -सम्बन्ध निम्नलिखित उद्देश्यों से स्थापित किया जाता है -

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(1) पाठ्यक्रम के भार को कम करना → सह-सम्बन्ध का उद्देश्य पाठ्यक्रम के भार को कम करना है। बालक को अनेक विषय पढ़ाए जाते है, बालक स्वयं उनमें सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाता है। अतः पाठ्यक्रम उसे भारस्वरूप मालूम होता है। अनेक विषयों का शिक्षण ~~समन्वित~~ समन्वित शिक्षा के अभाव मे बहुत कठिन है। यदि विभिन्न विषयों मे सम्बन्ध स्थापित करके पढ़ाए जाए तो पाठ्यक्रम सरल हो जाएगा। अतएव वाणिज्यशास्त्र का शिक्षण दूसरे विषयों के साथ समन्वय करके किया जाना चाहिए।

(2) ज्ञान की एकता का परिचय → समस्त ज्ञान अखण्ड है। उसे पृथक् - पृथक् भागों मे विभाजित नहीं किया जा सकता है। विभिन्न विषय ज्ञान के विभिन्न अंग है। ज्ञान परस्पर सम्बन्धित है। ज्ञान राशि मे ~~अनेकता~~ अनेकता मे एकता और एकता मे अनेकता (Diversity in Unit and Unity in Diversity)

का सिद्धान्त छिपा हुआ है। अतः विभिन्न विषयों और उपविषयो का परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। यह सह-सम्बन्ध द्वारा ही सम्भव है। इस सिद्धान्त को ध्यान मे रखते हुए वाणिज्यशास्त्र का शिक्षण, दूसरे विषयों के शिक्षण से अलग न रखकर इनमें सह-सम्बन्ध स्थापित करके, करना चाहिए।

वाणिज्य के सह-सम्बन्ध के प्रकार -

(1) शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध (Vertical Correlation)
(2) अनुप्रस्थीय सह-सम्बन्ध (Horizontal Correlation)
(3) जीवन से सह-सम्बन्ध (Correlation with Life)

(1) शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध → इसके अनुसार एक विषय के विभिन्न अंगों मे सह-सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, जैसे - व्यापार में, एकाकी व्यापार तथा साझेदारी व्यापार में सह-सम्बन्ध स्थापित किया जाए। यदि वाणिज्यशास्त्र शिक्षक देशी व्यापार (Home Trade) पढ़ा रहा है तो विदेशी व्यापार (Foreign Trade) के विषय मे बताकर, बीजक (Invoice) और विदेशी बीजक (Foreign Invoice) मे सम्बन्ध स्थापित करके, हुण्डी (Hundi) विनिमय-पत्र (Bill of Exchange) मे सम्बन्ध स्थापित करके पाठ को रोचक बना सकता है।

(2) अनुप्रस्थीय सह-सम्बन्ध → इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयो का एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसके दो रूप होते हैं -

(अ) आकस्मिक सह-सम्बन्ध (Incidental Correlation)
(ब) व्यवस्थित सह-सम्बन्ध (Planned Correlation)

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

(अ) आकस्मिक सह-सम्बन्ध → इसका प्रयोग अध्यापक अपने अनुभव के आधार पर करता है, ऐसा वह अनायास ही करता है। इससे पाठ को समझने में विशेष सहायता मिलती है। वाणिज्यशास्त्र पढ़ाते समय यदि मूल्यों (Prices) का वर्णन चल रहा है तो इसका समन्वय माँग और पूर्ति के नियम (Law of Demand and Supply) से किया जा सकता है।

(ब) व्यवस्थित सह-सम्बन्ध → इसके अन्तर्गत वाणिज्यशास्त्र शिक्षक विषय-सामग्री का चयन पहले से ही कर लेता है। इस प्रकार उसे पहले से ही यह मालूम रहता है कि कहाँ पर उसे क्या उदाहरण देना है। ऐसे सह-सम्बन्ध को व्यवस्थित सह-सम्बन्ध कहते हैं। प्रायः इस प्रकार का सह-सम्बन्ध अधिक उपयोगी माना जाता है। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में छात्राध्यापकों को इसी प्रकार के समन्वय का प्रयोग करना चाहिए।

(3) जीवन से सह-सम्बन्ध → हरबर्ट स्पेन्सर का मत था कि शिक्षा के द्वारा छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करना चाहिए। यह हम तभी कर सकते हैं जबकि विद्यालय की शिक्षा का बाहरी जगत से समन्वय स्थापित किया जाए। वाणिज्यशास्त्र को जीवन से सम्बन्धित करने का उद्देश्य यह है कि इसके सिद्धान्तों द्वारा बालक को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाए। इसके द्वारा शिक्षक बालक के भावी जीवन को तैयार करता है।

वाणिज्यशास्त्र का अन्य उपविषयों से सम्बन्ध →

प्राचार्य
... मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

हाईस्कूल कक्षाओं मे पढ़ाए जाने वाले वाणिज्यशास्त्र के चार प्रमुख उपविषय है -

(1) पुस्तपालन और लेखा-कार्य (Book-Keeping and Accountancy)
(2) व्यापार पद्धति (Business Method)
(3) अधिकोषण तत्व (Elements of Banking)
हिन्दी और या अंग्रेजी संकेत लिपि तथा टाइप राइटिंग (Hindi and English Short-hand and Type-writing)
(4) वाणिज्यिक अर्थशास्त्र (Commercial Economics)

वाणिज्यशास्त्र का अन्य शास्त्रो से सम्बन्ध

वाणिज्यशास्त्र और अर्थशास्त्र का गहरा सम्बन्ध है। अर्थशास्त्र मे मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है और वाणिज्यशास्त्र भी धन सम्बन्धी क्रियाओ का ही शास्त्र है। दोनो ही विषयों का उद्देश्य अधिकतम मानवीय कल्याण करना है। देश की उन्नति के लिए दोनो आवश्यक है तथा एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं। वाणिज्यशास्त्र के शिक्षक को इनमें सम्बन्ध स्थापित करना उपयोगी होगा।

वाणिज्यशास्त्र और समाजशास्त्र →

वाणिज्यशास्त्र तथा समाजशास्त्र एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। समाजशास्त्र के अध्ययन से वाणिज्य सम्बन्धी समस्याओ का हल आसानी से तलाश किया जा सकता है। व्यापार का सम्बन्ध समाज से ही होता है। अतः वाणिज्य की समस्याओ का अध्ययन

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

करने के लिए समाज का अध्ययन करना होता है। समाज के सदस्यों की रूची, फैशन, रीति-रिवाज आदि का ज्ञान व्यापारियों को उत्पादन क्षेत्र मे सहायक होता है। जो वस्तु समाज मे सभी को स्वीकार होती है, वही वस्तु व्यापारियो के द्वारा बनाई जाती है। अत: समाजशास्त्र का अध्ययन उत्पादन क्षमता बढाने के लिए अति आवश्यक है। आधुनिक युग में आर्थिक विचारो के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्थाओं का भी व्यापार पर प्रभाव पड़ता है।

वाणिज्यशास्त्र और मनोविज्ञान →

मनोविज्ञान मे हम मानव की मानसिक अवस्थाओ का अध्ययन करते हैं। मनुष्य की रूचि, क्षमता, मूल प्रवृत्तियाँ बुद्धि, अभिरूचि आदि का अध्ययन मनोविज्ञान मे किया जाता है। वाणिज्य की प्रक्रिया का मनुष्य की मानसिक अवस्था से गहरा सम्बन्ध होता है। अत: सफल और कुशल व्यापारी बनने के लिए मनोविज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रकार वाणिज्यशास्त्र और मनोविज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

वाणिज्य और नीतिशास्त्र →

नीतिशास्त्र मे हम अच्छाई और बुराई का अध्ययन करते है। अच्छे और बुरे बुरे मे भेद करते है। व्यापारी भी व्यापार मे के क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने के लिए नीतिशास्त्र के सिद्धान्तो का पालन करता है; जैसे — ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है (Honesty is the best policy) प्राय: सफल व्यापारी ईमानदार होते है। मानवीय सम्बन्धो की स्थापना नीतिशास्त्र के अध्ययन से ही सम्भव होती है।

सरकारी रिपोर्ट (Government Reports)

आधुनिक युग मे अर्थ, वित्त एवं वाणिज्य सम्बन्धी अधिकांश क्रियाएं या तो सरकार द्वारा संचालित की जाती हैं या निर्देशित की जाती है। निजी क्षेत्र (Private Se… के कार्यो पर भी सरकार का अप्रत्यक्ष नियन्त्रण रहता है। वाणिज्य के अध्… को चाहिए कि वह छात्रों को इन क्षेत्रों की गतिविधियों से परिचित कराता … अतः स्कूल के पुस्तकालय मे सरकारी रिपोर्टो का भी आना आवश्यक है।

सी.सी.ई. पैटर्न (प्रारूप) पर आधारित वाणि… पुस्तक →

सी.सी.ई. पैटर्न (प्रारूप) पर आधारित वाणिज्य पुस्तक निम्न लिखित है।

1. Agricultural Statistics of India.
2. Report on the Census of Live-stock.
3. ~~Statistical~~ Statistical Abstract of India.
4. Ploughs and Carts in India.
5. Indian Trade Journal.
6. Monthly Survey of Business & conditions…
7. Large Industrial Establishments in In…
8. Statistics of Factories.
9. Monthly Statistics of Production of Certai… Selecty Industries in India.
10. Labour Gazette.
11. Review of Trade of India.
12. Census Report
13. Gazette of India.
14. Provincial Gazette.
15. Monthly Statement of Prices.

मीरा … महाविद्यालय
शिक्षण एवं … शिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर … शाखा, बलिया

(16) Accounts and Statement of the Sea-borne Trade and Navigation of India.
(17) Accounts relating to Rail and Riverborne Trade of India.
(18) India Economic Enquiry Committee Report.
(19) Central Banking Enquiry Committee Report.
(20) National Income Committee Report.
(21) Exchange Control Manual.
(22) Company Law Enquiry Committee Report.
(23) Finance ~~Committee~~ Commission Report.
(24) Reserve Bank Bulletins.

इसके अतिरिक्त वाणिज्यशास्त्र के अध्यापक को निम्नलिखित प्रकाशनों से भी बालकों को परिचित कराना चाहिए :-

(1) जिला बोर्डो, नगरपालिकाओं तथा नगर - निगमो के (Publications of District Boards, Municipal Boards and Corporations) प्रकाशन।

(2) विश्व विद्यालयो के प्रकाशन (University Publications)

(3) अनुसन्धान करने वाली संस्थाओ के प्रकाशन (Publications of Research Institutions)

(4) रेलवे के प्रकाशन (Publications of Railway)

(5) डाक - तार विभाग के प्रकाशन (Publications of Post & ~~Telegra~~ Telegraph Department)

31/08/20

प्राचार्य
मोर. मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया